વિજય–દર્શન

૧. સવારાસપદ્મસની પુ.મ. શ્રી. કાલીનિગ્રણલિંગશત્મક: ૨૧/૪૧૮થા ૪૨/૨–૨
૨. લીલાશીલશીલખનદર શ્રી હેર્શિલાંભ્યની જે અપરીથ કાળિંગ: ૨૪. ૧૩. ૧૨. ૪મવારાર માંડ્યો: ૨૬૪
૩. કલિદપંસની અને કેમની કૃતિઓ: શ્રી. હેર્શિલાંભ ર. કાળિંગા: ૨૭૩
૪. બારક આવના સમાચારી વિશ્વાસ કાર્યક્રમ: શ્રી અગરવાલી નાઇટા તેમા: ૨૮૨

લસ્નાન સંઘિકી સુખના.

ધારણા અદાવતા કાળાંચા સબ અહી પુરુષ સાપ છે.
તો કેમ પરાંદુ પુરુષ સાથ હોય તેમાં પેલાના સબ અહી પુરુષને શ્રીપિંદી અદાવતા, લસ્નાનની નહી શે તો. આદાતા અહી લી. પી. થા ગોલકાલી આરોગ્ય તે સ્વચક્તિ લેના વૈશ્વવય છે. થયા.

લસ્નાન-વાર્તક અથવા દીપિયા: આ અહી સંખ્યા-૨૪ આના.
भावनाकृति

सम्पादक—पूज्य श्रीनिमहाराज श्री कान्तिविजयजी
निसाबिरामे भरिवायामि, गेढे पिल्ले किमई सुयामि।
श्रीमान्मापणंमुक्क्वायामि, जं धम्मविह्रो रवीते गमामि।
हमस्ते सदेष्ट्स दुखाल्यस्त, भक्त जीव लुभ् वा गाणस्तगमस्।
अभ्रके सर्वं कि पि अधिक्षरसं, जायाराि कृवि ब बुद्दस्।
माणस्तज्ञसे तुदुरक्षरणं, श्रिविहारय सि कथो य जेवं।
तुहे गुणे जह धाणकपुणं, हरसमसे वा य अवस्तगतं।
तुहे कि च भ्रमामि, श्रीगतानणुमीकरणिष्ट्म।
पुविष्टएण किचि कि तुदुरक्षरणं, महाराणाणुष्ट्म सणायमो मे।
चरणं चरेवं जह नो तेवसि, गिरहत्यरथम सि सामर्येसि।
सन्निस्त माणसि अद्रं न ढेे, फ्रोष्ट् धाणं जीवि बिसुपएसि।
बिवबुधं रूपा नामानागारसि, न धारिय संज्ञामोत्सि।
सन्निस्त में ति हु नामार, कहैं न होही भवजहाँपिरं।
देखो जिऩो छसु गुरु भयत्व, ततारं जीवित्रणपथ्य।
मनिसि जे खेद नसा कथ्या, अच्छूत ता पचसहम्मह्या।
यहा मुदी जे चहकन गोहे, तबेेण उमेग दमनति देहें।
न मनिसि धूमकत् नहैं, बहुमाणसारं वनमामि ते हैं।
मायापियापुष्पनायनसिंहं, लहु उज्ञ्यं सर्वावर्तं।
दम्मूस्त्म तोहि वणिषि, तमाभि नमामि तेषि मनिशारविंधं।
पुरविन पि जे १५ं गिहाकुणिलोणा, चित्रां व्रंगु कुचक्कालीणा।
अपुविष्ट्महिंद्र अद्रीणवोणा, कालोलिः जे पालनं जयण।
समिक्षियया नित्युचितुता, सम्भायस्यापेशु स्वाध्युगहता।
१३श्रेष्ठिकाविक बिन्दहाविन्या, न मोहेरं करणायं पि खुता।
न मोहेय ईद्यतकरेिहें, न बिद्या मयारकरेिहें।
न खोमिया तदुपरििहें, न गंजिया कोहाइमोहें।

(अनुसंधान दाह्यसाधन तेलं प्राने)

१ोमविकवर् प्रसं। मुखःवर् प्रसं। २ दिवश्यं प्रसं। ३ गेहस्त सं। ४ किजेवुखो सि निहाणस्तगमस् प्रसं। ५ दक्षुस्त्स प्रसं। ६ तेजप्रसं, तुहुङ्गुणं प्रसं। ७ हीमर्विन्दावयं प्रसं। ८ कहे अन्ध होही प्रसं। ९ के इकहें कथा प्रसं, केिव हेि शुचरा प्रसं। १० जिर्मयं प्रसं। ११ बिंद प्रसं। १२ नो गिहो प्रसं। १३ संभेसििचित् प्रसं।
શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશા

જૈન સત્ય પ્રકાશા

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશા

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશા

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશા

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશા

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશા

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશા

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશા

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશા

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશા

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશા

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશા

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશા

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશા

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશા

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશા

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશા

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશા

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશા

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશા

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશા

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશા
श्री कैलास ग्यानमंडिर

श्री महावीर जैन अर्धाठन केंद्र

www.kobatirth.org

एचयाँ श्री कैलास ग्यानमंडिर

For Private And Personal Use Only
लालिली
श्रीमहागणाथिपति नमः

(उदा)
आदिकरण यादि जगत् आदिकरण जिनराजः
पुरुषनाथ साधौ धार्मी कर्मण श्री महाराजः
कालस्य गोत्रं इत्समस्य महदेवी जननी जायो
नाममनार्त्तुराज्ञ सम के धर्मस्य जात्रायो

इसी श्रुपमनिविन्ध प्रमुख कंपतु नर्वर धुनि जिन मित ध्वनिक ॥ ३ ॥
क्षुद्रदेशम समागतं जय दुःखेन ज्ञाय दमावमहादा ॥

क्षाकी महंसिः अपरीपराः कविज्ञ महेक्षो वेदान्तः
आदाम भूलयुत काश्चार्य अनौक्षेपितर अख्दृताः
सुरति नर्वति बोधिद्ध पदवुष्य सन्निप धृतिः
वशी इययो द्वार विशाली वरस पांचे विकासः
हरसंगोपतः श्रवणं व्यजस्य राज्यम गुणान्तः
समयं तीत्तत वह अख्दृतं व प्रसंगत ज्ञात जायेः
नयं क्योंवाह जाते अभिविव सहसा उद्वेगे धरायेः

प्रफात प्रवत्सवकी तन्वर सुंदरी मय्यारं घर मन फळ्ठ
वाप के सध आयोकण्मके भईं काल्य मननके ॥ ८ ॥
श्री महाविर जैन आर्धना केंद्र

श्री कैलासगरसूरी ज्ञानमंदिर

एच.एच. प्रेमीयम:

तुल्य अनशुद तुल्य भागवत तुल्य जिनराज तुल्य जग संत

तुल्य जगनाथ तुल्य प्रतिपाल तुल्य मनमोहन गाजिदाराल

तुल्य मनमोहन भावमरु तुल्य ओरेजन रंजनमूर पं

तुल्य अविनाश तुल्य महाराज तुल्य चतुराम तुल्य वधमाग

तुल्य गुणराम तुल्य निसराम तुल्य नवनिध तुल्य वधमाम

तुल्य अभास तुल्य अविनाश तुल्य हितवंत तुल्य महिवास

तुल्य गुणकेन्द्रहर पंतुल्य जगजनर तारत संत

तुल्य जगवेश तुल्य जगपर्य तुल्य चिदरुप तुल्य जगभोग

तुल्य मम मात तुल्य मम तात तुल्य मम भात तुल्य मम ढात

तुल्य सुकुलसपत राखण्डार तुल्य हुकदोहग राजन्हार

(खायन)

कैसे करां एक तोपे जिनपति क्रंत कुकसे नाहि दरते।

पुर्ख कस्मके खिल के के किसके दोर नाहि दरते।

पिण तुज शासन जगहोहोना ब्याघं ढंडेरो बाजां है।

आपकम अर तैनामके फठ पाँ सो लाजत है।

श्री एक नीवे सखो न जाय है। आदिनाथ जग रवान।

करणाकरसे होग नियारो गुण कोई जगप्रतिपाल।

आप प्रसत होइ फठ विजोरो हासातो फठ तब दोनो।

मयणा तप उद्यास भई मनविलो कारण क्व नवन।

नव दिन नमणवर तनु फरसे कुकूं दव सत नासि है।

कामदेश प्रसु अयं समोवन नप श्रीपाल सुदवान है।

या कितने हे प्रमू तिवारि भूतल प्रगत प्रगहे जस तेरे।

आलोच बैंग मासेम महिया देसहेमें प्रसु तेरे।

फिर बागदेश बड़ेद नवर्में जगप प्रमू करण फिरनी।

कौने वाल छों पुजनमहिमा अविचार भूतल क्ष दीनी।
महात्म फर्ते लोको चाव्रो चोरासी अंग।
फरी मेलो लाखां गाळो आये फुरेिे तुरूग। १ ॥

(लावणी)

गाम फुरेिे बंचवालें मुदत रंगे है च्रिच्छु नहीं।
गाय आपे केवल बणिोलको आई उहाँ चरति चरनि। २ ॥
अहे ताकां पश्चा विस्तार सांज समे फिर गईं दुरेिे।
शिस करे तब गोवगान पर गोवाणक शीर धूरे मूग। ३ ॥
दुरे धन गोवाणो आयो लहाँ मेद्द कहू विष्णुमें।
सेत ध्राय तब निजरे देखौ चक्खत मध्यो है नमनमें। ४ ॥
मध्य निसारें फुरुनो दिनो श्रममठनारको मुदत है।
वाहिर काढे को लापसी भितर मुरूत पूरत है। ५ ॥
नव दिनमें सध धाय विस्तारम मत काढो तु मव दिनमें।
क्रोधो टोजिे हृदयप्रमाणे आयो सेव बढो। ६ ॥
केह ज्ञानाथी केही नतमाणी केही ज्ञानों पाव चलो।
केह तोकतु कर वधा करो श्रुद्धको दरिष्यन हें। ७ ॥
यो सब देखो नसले दरिष्यनकू केही लोम शुदत काढो।
लोको लाभो महाराजकी मुदत धन सबे दिनो खाडो। ८ ॥
(हृदय) 

संवत अठारह सहस्त्रस्मृति भाव सत्यावर्तम | 
कोयो श्रीगणेश दुहुरे भाखे वर्ष बनाम ॥ १ ॥

(छठ—मोदिदुम) 

सत्यावर्तम स्वच्छे मन पूह छठे बहु धाम जगी पर जेहू | 
उलट पत्तनाथ धूले कहाय जलोखन ध्रुव भंडार सुनाय ॥ २ ॥

dरवान्त अव दूरण गाम धूले भरी सव माल भरी ततलेक ।

dाय निम्र फोज छठे दलगाज तोपां दीय साथ बीघे बहु लाज ॥ ३ ॥

dयु दीय लार लिए फिरसंगां उषां भर साथ लिए कोक बांझ ।

तब बहु छोक कहे माहाराज नई दईः कारज कु ट लकाज ॥ ४ ॥

ए तो बहु श्रावल देव कहाय रहे नईः लाज तिहारी काय ।

तव फिर बोले सत्यावर्त भूप मईः सत्र चाँ अवां चढ़ बुंप ॥ ५ ॥

इसो कही आय तुड़ कहर कियो निज राको नाय हजूर ।

रामो नईः नाथ तव निज राक ग्यो मचकत मन निर्गिराण ॥ ६ ॥

तव मन निचे भंडारि तुड़ भंड बन बोहे सवे ख्यात ।

छठे संग थाय सुकां मन जार कियो तव कुंवर छठे सब जार ॥ ७ ॥

केरे वन गाम पुकार पुकार भंडारि सवे व पुकार पुकार ।

क्यों ज्वव जाहर नाथ दुहाल गनो कहीं जाज गरीविनाज ।

क्ये ज्वव जाहर राकण जाज (चंद्रदी) ॥ ८ ॥

(हृदय) 

उण समे कोठ रेषको जाहर तारण काज ।

गये हृदे नाहारकरी मेरे गाँव बहु गाज ॥ ९ ॥
मुख्य अर्जुण श्रीधिनाथजी सेवे जुनेव मजार।
कियो विश्वासो होखे सीव चोरे जन तार \ II 2 II
आये तुरत मारा जजी करवा जन संभाल।
दो पोटे द्वारमी चोरे मेहर आर प्रतिपाल \ II 2 II
सिम्बनी रुप आपे कियो दिस दिस फोज हजार।
मार मार चोरतरंते अभी चड़ाई त्यार \ II 4 II

( छंदम — शृजनई )

कुकु कुक छेंट को तो बांग समान समान लिंग तरंगक बांग।
पूर्णके घूमके वहे नावगोळा जिसा कर्कसा जमरा नेंग बोझ \ II 1 II
केते अंगपे संपरा घाव ङांगे केते मारीबि कपटे दूर भागे।
केते दंतपे त्याने देशव रंग केते थर्णे सेस होवे न रंग \ II 2 II
केते रखून, ईक्कू, ईक्कू, पुकारे किते दोन बेरे खुदाये संभारे।
किते नाथकु लेरा राय माने केते नाथकु जागति जोत जाने \ II 3 II
सदासीबेंवा घाव लगो अटरो पूनि माउ जस्वर्त दोनू संहरे।
बडो किंपे जानी सुवे भो(副)ज माजी हुई केसरालाहरी जित बाजी \ II 4 II
सदासीबेंवे घाल लगो अटरो पूनि माउ जस्वर्त दोनू संहरे।
बडो किंपे जानी यह पोज माजी हुई केरया नावहरी जित बाजी \ II 5 II

( छंदो )

वाविच कल्यण जगन्ना तार्क ने जगनराज।
दीपविजय कविराजकु महिर करो महाराज \ II 1 II

( छंद — मोदीवाम )

तुंही अहरित तुंही नवनिच तुंही मनवेत्त्य इत्यसि च।
तुंही तिरपद तुंही किरकार तुंही सरणगम दीनदयाल \ II 2 II
tुंही घटकं तुंही गाविचने तुंही सुरसळ तुंही मम हेन।
tुंही दिष्कार्यवर्त दास्यक देश तुंही विसराम तुंही जब सेव \ II 3 II
tुंही मम प्रफु आपार जहर तुंही मम इक्तुल दास्यक नू।
tुंही मम शुपु तुंही पारसाह तुंही मम रौड़ मंडारी अगाह \ II 4 II
श्री कैलास ग्यानमंडिर

(लघुप्रणीति)

नाथ धूलेबा किरत सुन्दरके देसदेसके त्रुटि आचात हैं।
केसरमे गगाव रहें हैं केसरी नाथ कहावत हैं।
खेवर परंगे देसदेसावर फरी तुहाई नाथकी।
हिंदू मुसलम बड़ रागां हाजर परे इत्यादि सव मनकी।
जालवट धावें बाटायामें रण राहुल अय दूर हरे।
तनमन धालें एक चित सम्रें अख्त लजानो अभार बैंग।

(कक्षक)

ऋषभमान ध्रुवनाथ ऋषभ तुहाड़ाविद्वार मंजरण।
ऋषभमान ध्रुवनाथ विवेके गुप मनरजन।
ऋषभमान ध्रुवनाथ सम्यक वाहिन धार्मिक।
ऋषभमान ध्रुवनाथ मनकल नाम गुजाई।

दीपविज्ञे कविराज कहें स्वामे मुख दाजर संगै।
कौशुम लाभों देवा तुहुर नर सवि किरत कहे।

इति श्री ऋषभदेवजीस लावणी संबंधम्।

संवत् १९१३ वर्ष मिति आदेश बाद ७ दिने दक्षिणदेशे गाम देवखं मथे।
साहुजी महाराज श्री १०८ श्री हेमसागरजी तत्त सिद्ध श्री १०६ श्री रघुचंद्रजी
तत्त शिः नमदाल भक्तान्न्यम्व। विशिष्टं द्वे अमरचंद पवित्राण।
લક્ષણક્લાયાય અને અમેરી કૃતિશાસ્ત્ર
(વ. કબાત શ્રી હૈરમાલા રાજા કાધ્યાના રામકૃષ્ણ જાન)
<table>
<thead>
<tr>
<th>વસ્તુ</th>
<th>વર્ષ</th>
<th>સંખ્યા</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>2. કૃષ્ણભૂમિધીનરસાંવાદિત</td>
<td>1971</td>
<td>1552</td>
</tr>
<tr>
<td>3. જેવીપ્રભાષાશુદ્ધિ</td>
<td>1971</td>
<td>1542</td>
</tr>
<tr>
<td>4. અમિતદૃશ્યશુદ્ધિગાંગાવંદિત</td>
<td>1971</td>
<td>1542</td>
</tr>
<tr>
<td>5. વિનંદ્યુતિ</td>
<td>1971</td>
<td>1542</td>
</tr>
<tr>
<td>6. જાનની અલીયાશુ (સોડાખાંડની અલીયાશુ)</td>
<td>1971</td>
<td>1544</td>
</tr>
<tr>
<td>7. જાનની અલીયાશુનો બાલકનાગદો</td>
<td>1971</td>
<td>1544</td>
</tr>
<tr>
<td>8. ગાંધીજી</td>
<td>1971</td>
<td>1545</td>
</tr>
<tr>
<td>9. રાજસ્થાની અલીયાશુ (સૌ રીતાલિનદ્યુ)</td>
<td>1971</td>
<td>1545</td>
</tr>
<tr>
<td>10. 'દેવાન અલી' સ્ટોલાંગી</td>
<td>1971</td>
<td>1545</td>
</tr>
<tr>
<td>11. પુનર્વચારવખત વિજય</td>
<td>1971</td>
<td>1542</td>
</tr>
<tr>
<td>12. અભાવાંદનપ્રરૂપ</td>
<td>1971</td>
<td>1542</td>
</tr>
<tr>
<td>13. રાખાપુરાશીશાલ વિષયરૂપ</td>
<td>1971</td>
<td>1545</td>
</tr>
<tr>
<td>14. શાખાબો</td>
<td>1971</td>
<td>1547</td>
</tr>
<tr>
<td>15. પશ્ચિમ રાજસ્થાનના સ્વતંત્ર નામકો</td>
<td>1971</td>
<td>1543</td>
</tr>
<tr>
<td>16. નીકલીયાનાં વિષયરૂપ</td>
<td>1971</td>
<td>1543</td>
</tr>
<tr>
<td>17. કેશવસ્થ વિષયરૂપ</td>
<td>1971</td>
<td>1543</td>
</tr>
<tr>
<td>18. કલમાનાં વિષયરૂપ</td>
<td>1971</td>
<td>1544</td>
</tr>
<tr>
<td>19. સાધારણ સ્વરાંગનાં વિષયરૂપ</td>
<td>1971</td>
<td>1544</td>
</tr>
<tr>
<td>20. સમુદ્ર વિષયરૂપ</td>
<td>1971</td>
<td>1545</td>
</tr>
<tr>
<td>21. 'સનાલા' સ્ટોલાંગી</td>
<td>1971</td>
<td>1548</td>
</tr>
<tr>
<td>22. કાર્યિક-કાલપનાનાં રાશ</td>
<td>1971</td>
<td>1549</td>
</tr>
</tbody>
</table>

આ પેટર વિનંદ્યુતિ, રાખાપુરાશીશાલ વિષયરૂપ, અને સુરાંગનાં વિષયરૂપને જો આપી હતી. સા. સ. 8. ના આખારે આપેલ શાક્તિચત્રનાં શાક્તિચત્ર શાક્તિચત્ર શાક્તિચત્ર શાક્તિચત્ર શાક્તિચત્ર. શાક્તિચત્રનાં શાક્તિચત્ર શાક્તિચત્ર શાક્તિચત્ર શાક્તિચત્ર. શાક્તિચત્ર શાક્તિચત્ર શાક્તિચત્ર શાક્તિચત્ર.
સામાન્ય પ્રતિષ્ઠાનમાં અને જીત્વની શ્રીઅમાતાની ત્રિતીય વાત: 

(1) 'સામાન્ય! નાખો!' સ્ત્રીલોકમાંથી 'અસાધ્ય નાખો નાખો!' રાખી સ્ત્રીલોક હેઠળ માનસિક સંક્રમણ અને પ્રેમપંથ પ્રદેશમાં જ સ્ત્રીલોકમાં જીવનની ત્રિતીય વાત હેઠળ શરૂ કરી હતી. ત્રિતીય વાત શરૂ કરી હતી તે પરિસ્થિતિમાં હેઠળ શરૂ કરી હતી. ત્રિતીય વાત શરૂ કરી હતી તે પરિસ્થિતિમાં હેઠળ શરૂ કરી હતી. 

(2) સામાન્ય પ્રતિષ્ઠાનમાં શરૂ કરી હતી. ત્રિતીય વાત શરૂ કરી હતી તે પરિસ્થિતિમાં હેઠળ શરૂ કરી હતી. ત્રિતીય વાત શરૂ કરી હતી તે પરિસ્થિતિમાં હેઠળ શરૂ કરી હતી. 

(3) સામાન્ય પ્રતિષ્ઠાનમાં શરૂ કરી હતી. ત્રિતીય વાત શરૂ કરી હતી તે પરિસ્થિતિમાં હેઠળ શરૂ કરી હતી. ત્રિતીય વાત શરૂ કરી હતી તે પરિસ્થિતિમાં હેઠળ શરૂ કરી હતી. 

(4) સામાન્ય પ્રતિષ્ઠાનમાં શરૂ કરી હતી. ત્રિતીય વાત શરૂ કરી હતી તે પરિસ્થિતિમાં હેઠળ શરૂ કરી હતી. ત્રિતીય વાત શરૂ કરી હતી તે પરિસ્થિતિમાં હેઠળ શરૂ કરી હતી. 

(5) સામાન્ય પ્રતિષ્ઠાનમાં શરૂ કરી હતી. ત્રિતીય વાત શરૂ કરી હતી તે પરિસ્થિતિમાં હેઠળ શરૂ કરી હતી. 

(6) સામાન્ય પ્રતિષ્ઠાનમાં શરૂ કરી હતી. ત્રિતીય વાત શરૂ કરી હતી તે પરિસ્થિતિમાં હેઠળ શરૂ કરી હતી.
(૧) કનનકુલની છે કીતીને. ભારી લોકાં આપછે તે માં યોગ્ય કરા તરફ ગેલાલા નામ આવેલ છે. તે આ લોકોના કાર્ય કરાવેલ નામ કરીને કલ્યાણી હોમ તથાયે આપે ફેયર લિંકશેલી હોય થાય તથા જે કે અસાધ્ય અસાધ્ય આપનું આચાર. આ અંદાજે આસાર, જે પણ ઉપયોગી અને ઉપયોગી કેટલી ચાલાય છે તે જે સારા તરીકે કારણ કારષો શેષ નથી. 

(૨) હાંકાસ્કર-આ હાંકાસ્કર તવની ધ સ. ૧૧૬૧થી પ્રસિદ્ધ \શ્રીગોયડર \શ્રીજાલ \શ્રીમંત કોયડર ૧૪ \શ્રીમંત દેવદેવિ શ્રીમંત પાણી તે વિદ્યુત વાહને \લાઇનસ્ટીન રાખેલા 

(૩) આ લોકોને ગુજરાત અને ભારત માં અભિવૃદિભારતી જગ્યાના અંદાજે જે કે આમારી દિલ કલ્યાણી હોય તારીખમાં ૧૯૦০થી શ્રીમંત વૈભવ કોયડર \શ્રીમંત દેવદેવિ \શ્રીમંત પાણી તે વિદ્યુત વાહને \લાઇનસ્ટીન રાખેલા 

(૪) હે|તex|ટ}

(૫) આ કલ્યાણી લોકાં દુર્ભાગ્યની કીતીને નહી હોય?

(૬) આ કલ્યાણી લોકાં દુર્ભાગ્યની કીતીને નહી હોય?

(૭) આ કલ્યાણી લોકાં દુર્ભાગ્યની કીતીને નહી હોય?

(૮) આ કલ્યાણી લોકાં દુર્ભાગ્યની કીતીને નહી હોય?

(૯) આ કલ્યાણી લોકાં દુર્ભાગ્યની કીતીને નહી હોય?

(૧૦) આ કલ્યાણી લોકાં દુર્ભાગ્યની કીતીને નહી હોય?

(૧૧) આ કલ્યાણી લોકાં દુર્ભાગ્યની કીતીને નહી હોય?

(૧૨) આ કલ્યાણી લોકાં દુર્ભાગ્યની કીતીને નહી હોય?

(૧૩) આ કલ્યાણી લોકાં દુર્ભાગ્યની કીતીને નહી હોય?

(૧૪) આ કલ્યાણી લોકાં દુર્ભાગ્યની કીતીને નહી હોય?

(૧૫) આ કલ્યાણી લોકાં દુર્ભાગ્યની કીતીને નહી હોય?

(૧૬) આ કલ્યાણી લોકાં દુર્ભાગ્યની કીતીને નહી હોય?

(૧૭) આ કલ્યાણી લોકાં દુર્ભાગ્યની કીતીને નહી હોય?

(૧૮) આ કલ્યાણી લોકાં દુર્ભાગ્યની કીતીને નહી હોય?

(૧૯) આ કલ્યાણી લોકાં દુર્ભાગ્યની કીતીને નહી હોય?

(૨૦) આ કલ્યાણી લોકાં દુર્ભાગ્યની કીતીને નહી હોય?

(૨૧) આ કલ્યાણી લોકાં દુર્ભાગ્યની કીતીને નહી હોય?

(૨૨) આ કલ્યાણી લોકાં દુર્ભાગ્યની કીતીને નહી હોય?
अंक ११] कन्धकुलसमस्ति अने जीवनी तृषितोऽि

भागां मणिने तोको फोलिया ज्ञाने क्षण मने ज्ञाने संसारांक । स्वस्तते प्रसंग क तबल्ला तथा के ।

(१०) देवाः अत्या रीतें रीतें अन्वयितृति देवाः अन्वयितृति। देवाः है! यदय है देवाः तद्दैव रीतें रीतें अन्वयितृति देवाः अन्वयितृति।

(११) प्रकाशमेत्प्रस्थिति रीतें रीतें (मूलप्राण । २३) रीतें रीतें अन्वयितृति देवाः अन्वयितृति। देवाः अन्वयितृति। देवाः अन्वयितृति।

(१२) अन्वयितृति रीतें रीतें (मूलप्राण । २३) रीतें रीतें अन्वयितृति देवाः अन्वयितृति।

(३) रंगकरण्त्विविधकरणानां (मूलप्राण । २३) रीतें रीतें अन्वयितृति देवाः अन्वयितृति।

(४) रीतिक्रिया अन्वयितृति रीतें रीतें (मूलप्राण । २३) रीतिक्रिया अन्वयितृति देवाः अन्वयितृति।

(५) रीतिक्रिया अन्वयितृति देवाः अन्वयितृति। देवाः है! यदय है देवाः तद्दैव रीतें रीतें अन्वयितृति देवाः अन्वयितृति।
(१५) परिस्थितियों में आवश्यकता हैं—ग्रहण—ग्रहण, उपयोग—उपयोग, कुशलता—
कुशलता, दया—दया, भौतिक—भौतिक, व्यक्ति—व्यक्ति, व्यक्ति—आचार, आचार—
आचार, व्यक्ति—व्यक्ति, व्यक्ति—व्यक्ति, व्यक्ति—व्यक्ति। तो आ अनुष्ठान ‘ग्रहण’ पश्चात् कप्तान अथवा राजस्वाधीनता—
पश्चात् ‘ग्रहण’ नाम-नाम वृत्ति है तो जो उपाधियाँ आ है। जिसे जो ते हो। पश्चात् आपका
पत्र के अन्य शुभमिलनों सार्वजनिक आवश्यक हों। ऐसे अन्य नाम त्योथ्मक मान है।
आपके सम्पर्कों में शांति है।
(१६) बालबहुविवस्तुति—‘पवित्रकौमण’ यो श्रद्धा अन्य प्रतिविमुख विवस्तुति नहीं आ विवस्तुति ना जाति आ है। ये आचारीय म्यार्ड है। आ
(१७) शोलेरुतितिविति—शोलेरुतिति—शोलेरुतिति—शोलेरुतितिविति—शोलेरुतितिविति—शोलेरुतिति—शोलेरुतिति—शोलेरुतिति—शोलेरुतिति
(१८) विराजमानकस्तिकरणों—‘कहानीतक्ति’ इंसान-स्वरूपके २५ प्रमाणों
सामीलाहितू रूप है। जोने ‘विराजमानकस्तिकरणों’ पश्चात् ‘ग्रहण’ उपर विराजमानकस्तिकरणों
रूप घाते मां वैदेयक ‘विराजमानकस्तिकरणों’ (२५०) या है। उन्हों के कंपक्तवाले (विराज-
स्वरूपके २५ प्रमाणों सामीलाहितू रूप घाते मां वैदेयक ‘विराजमानकस्तिकरणों’ (२५०) या है। उन्हों के कंपक्तवाले (विराज-
स्वरूपके २५ प्रमाणों सामीलाहितू रूप घाते मां वैदेयक ‘विराजमानकस्तिकरणों’ (२५०) या है। उन्हों के कंपक्तवाले (विराज-
स्वरूपके २५ प्रमाणों सामीलाहितू रूप घाते मां वैदेयक ‘विराजमानकस्तिकरणों’ (२५०) या है। उन्हों के कंपक्तवाले (विराज-
स्वरूपके २५ प्रमाणों सामीलाहितू रूप घाते मां वैदेयक ‘विराजमानकस्तिकरणों’ (२५०) या है। उन्हों के कंपक्तवाले (विराज-
स्वरूपके २५ प्रमाणों सामीलाहितू रूप घाते मां वैदेयक ‘विराजमानकस्तिकरणों’ (२५०) या है। उन्हों के कंपक्तवाले (विराज-
स्वरूपके २५ प्रमाणों सामीलाहितू रूप घाते मां वैदेयक ‘विराजमानकस्तिकरणों’ (२५०) या है। उन्हों के कंपक्तवाले (विराज-
स्वरूपके २५ प्रमाणों सामीलाहितू रूप घाते मां वैदेयक ‘विराजमानकस्तिकरणों’ (२५०) या है। उन्हों के कंपक्तवाले (विराज-
स्वरूपके २५ प्रमाणों सामीलाहितू रूप घाते मां वैदेयक ‘विराजमानकस्तिकरणों’ (२५०) या है। उन्हों के कंपक्तवाले (विराज-
स्वरूपके २५ प्रमाणों सामीलाहितू रूप घाते मां वैदेयक ‘विराजमानकस्तिकरणों’ (२५०) या है। उन्हों के कंपक्तवाले (विराज-

(20) सुरुचिसुनिकथा—ज्ञानी झेल कामपूर्वक अहूणा निवासार्तमना कार्यरतां हैं. यहुद तीव्र दिवसानि वत्सरानि तत्स्यिः प्रभुं हृदयेनि छान्ते, पूजा आगे ने लोग नर्तां. ठीक उत्तारवश दृष्टि रहती है. कुछ आपि तस्यिः प्रभुं हृदयेनि छान्ते, पूजा आगे ने लोग नर्तां. ठीक उत्तारवश दृष्टि रहती है. कुछ आपि तस्यिः चण्डन अधिकार छ. पुरुष-च्या दृष्टि नि-भोजने न पिता ने ‘पाष’ पृथ्वी बोले ते तापसिता हुए द्वारा चण्डन अधिकार छ. पुरुष-च्या दृष्टि नि-भोजने न पिता ने ‘पाष’ पृथ्वी बोले ते तापसिता हुए द्वारा चण्डन अधिकार छ.

(21) ‘सन्ततर्था’ सुरुति धृति—‘सत्यसंस्करण’ हुज्जूद-दर्शिना विवेचन्य आधारतः ‘सन्ततर्था’ के भवति आहे पहली सुरुति धृति हैं जो केहत्रां छ. अन्य अन्य अतिकरणासहित अभिबाहन करते है जो ज्ञान ज्ञाने ‘विवेचन्यां’ (प. 445) देश भें हैं ते भवति छ. पृथ्वी ज्ञान-लक्षणे हुज्जूद-दर्शिनां विवेचन तरीके साहित्य आमाले छो. आहे भूत है।

(22) हरिका-दत्ता राष—सु. 3. (भा. 1, प. 583) अहे राष निष्ठे अने जी वि. स. 1983 मध्ये निष्ठे हुज्जूद छ. पृथ्वी अभिव्यक्ति अपि सत्तुमा देश हूँ देश भें विवेचन तरीके थें है। प्रभु में भवति हासिल विषयां खसे हुर्ज्यां छ. पृथ्वी अभियोजन करते हैं, हुज्जूद देश भें निष्ठे भवति अपि सत्तुमा देश हूँ देश भें हुज्जूद देश भें निष्ठे भवति अपि सत्तुमा देश हूँ देश भें निष्ठे भवति अपि सत्तुमा देश हूँ देश भें हुज्जूद देश भें निष्ठे भवति अपि सत्तुमा देश हूँ देश भें हुज्जूद देश भें निष्ठे भवति अपि सत्तुमा देश हूँ देश भें हुज्जूद देश भें निष्ठे भवति अपि सत्तुमा देश हूँ देश भें हुज्जूद देश भें निष्ठे भवति अपि सत्तुमा देश हूँ देश भें हुज्जूद देश भें निष्ठे भवति अपि सत्तुमा देश हूँ देश भें हुज्जूद देश भें निष्ठे भवति अपि सत्तुमा देश हूँ देश भें हुज्जूद देश भें निष्ठे भवति अपि सत्तुमा देश हूँ देश भें हुज्जूद देश भें निष्ठे भवति अपि सत्तुमा देश हूँ देश भें हुज्जूद देश भें निष्ठे भवति अपि सत्तुमा देश हूँ देश भें हुज्जूद देश भें निष्ठे भवति अपि सत्तुमा देश हूँ देश भें हुज्जूद देश भें निष्ठे भवति अपि सत्तुमा देश हूँ देश भें हुज्जूद देश भें निष्ठे भवति अपि सत्तुमा देश हूँ देश भें हुज्जूद देश भें निष्ठे भवति अपि सत्तुमा देश हूँ देश भें हुज्जूद देश भें निष्ठे भवति अपि सत्तुमा देश हूँ देश भें हुज्जूद देश भें निष्ठे भवति अपि सत्तुमा देश हूँ देश भें हुज्जूद देश भें निष्ठे भवति अपि सत्तुमा देश हूँ देश भें हुज्जूद देश भें निष्ठे भवति अपि सत्तुमा देश हूँ देश भें हुज्जू�
बारह भावना संबंधी विशाल साहित्य
केलक – श्रीयुत अगरचंद्रजी नाहटे

‘जैन सत्य प्रकाश’ के क्रमांक १५३ में युनी रमणीकविज्ञती का ‘बारह भावना साहित्य’ विषय किंक्र विशेष लेख प्रकाशित हुआ है। उसमें आपने मेरे देशके सम्बन्धमें जो कुछ लिखा है वह विचारपूर्वक प्रतीत नहीं होता। क्योंकि मैंने अपने देशमें यह सप्त लिख दिया था कि—“बारह भावना का साहित्य बहुत विशाल है। काव्यिकोवजीने जो शृंखली उपस्थित की है उत्तम ही साहित्य और भी मिल सकता है। मेरी जानकारीमें भी ज्ञात ऐसे अन्य आप स्वीकारेंगे जिनमें बारह भावनाओं का विचार है पर अधिक वह हेतु साप्त ही नहीं है, अतः विशेष विचारार्थ मतियों की जानकी। यहाँ तो दो चार बातें पर ही प्रकाश डाला जा रहा है।” अर्थात् उस देशका देशक लिख (पाकिस्तान) में अपने व्यापारिक केंद्राने भी विशेष लिखना जाने पर उत्तम था। वहाँ साधन न होनेके जो कुछ आवश्यक सुचना करना था कर दिया गया। विशेष विश्वेश विकार करनेका निर्देश भी कर दिया था तथा “ताहटाजी नी नौंकिया विशेष अवस्था तरीके लास काई जनाउँद्र नथी” लिखने का कोई अन्य नहीं रह जाता, क्योंकि उसमें सप्त रूपसे ताहटाजीकी विशालता, २ मेरे अवलोकनमें अन्य अनेक अन्य ज्ञानका आया, ३ उस समय साधनोंका पालनमें न होना, ४ मतियों में विशेष प्रकाश डालनेकी सुचना कर ही दी थी। कुंदकुंद के समय व सक्कनःके गर्भ समस्त सप्त अवस्थकारको आपने अस्पिष्ट बताया है पर जिस देशके संबंधमें विशेष अवस्था लिखा गया उसमें इन दोनों बातें के संबंधमें बचरी है अतः इनके संबंधमें लिखी गई टिप्पणी अस्पिष्ट नहीं मानी जा सकती। सक्कनःके चाहे अन्य साहि दुर्गाचीनी मानते हों पर काव्यिकोवजीने "कृपावर के (निर्देश नहीं) पण प्रमाण गर्भ समय इत्यादि विशेष कई उद्धेंश जाणारामी नथी" लिखा है अर्थात् ये इसे अंतिम नहीं मानते इसी फ़िल्में तमाशा आवश्यक हो गया था। अस्तु।

अब मैं अपनी पूर्व मुख्यांकुर्सार बारह मानना संबंधी जो विशाल साहित्य मेरे अवलोकन एवं जाननेमें आया है उसीका परिचय दे रहा हूँ।

(१) यथापि काव्यिकोवजीका अवस्थन वहुत विशाल एवं स्पष्टि तेज है अतः बारह मानना संबंधी साहित्य की विश्वस्त चुरी दी है पर उसमें पुनः सम्बन्धी
(२) पाठक के तात्पर्यीय प्रत्यक्ष ध्वनियों में ही ऐसी रचनाओं का निम्नलिखित निर्देश पाया जाता है। यथा—

१ द्राक्ष मावन गा. २८ (२१०) कुबे प. ९६-९६
२ " " कुलक गा. ३२ जिनेवरसुंति " प. २४
३ " " गा. १२ पु. ४१०
४ मावन मकरण गा. १४ पु. २३-२६९-२६६
५ " संग पु. ३९४
६ मावनानार अपरंग गा. ८८ पु. २९
७ मावन कुंक गा. ३० पु. ८९
८ " गा. २४ सोमदेव पु. १८०-५००
९ " गा. २२ सोमोगप पु. १८०-५००

नं. ४ व ६ से ९ में १२ मावन का (उद्धरणों में तो) नामनिर्देश नहीं है परविश्वास यही प्रतीत होता है। प्रति देखने से पूरा निर्णय हो सकेगा।

(३) जिनरल कोष में निम्नलिखित रचनाओं का निर्देश है—

१० द्राक्षमावन विनयविजय देशला उपासरासु (संगम है शान्त-घुरासु हो अय नाम हो)
११ द्राक्षमावन (कथा) लीलायत नं. ९६२
१२ " प्रकरण

मावना नामकरित १ मावन मकरण (गा. ४९४ ईस. नं. ८९२), २ मावनानार, ३ मावनास अधितिम भाविका उल्लेख है। संभवतः इनमें भी १२ मावनाओं का उल्लेख होगा। निर्णय तो प्रति देखने से हो सकता है।
(४) हमारे संग्रहों में दादल भवनाकुंटल गाथा १२ (१५) के व दादल
मांचन कवारी ४ प्रतिवेद हैं—
१ मायनीविचार—रहस्यभवन, २ मायना बेन्डा जयसीम एवं ३ भावना
संज्ञायं सचजनिरंद्र कुंज, ४ जयसीम कुंज मायना संचिरी हमारे संग्रहों में हैं एवं
बारों प्रकाशित सी हैं।
१ बारी मायना कवा ( हमारे संग्रहों ) २ पकारकी हैं।
२ मायना विचार, मगन ( सं. १९५२ वे. दू. २ कल्याणपुरी)
३ १२ मायनागिरी, पहलाज ( १७ वीं ) गा. १२
४ समवेतस्तर
आधुनिक रचित एवं प्रकाशित ग्रन्थों में निश्चित उल्लेखनीय हैं—
१ मायनाभाष्य—विनयविजयजी हमारे संग्रहों
२ मायनावेच—राजबंद्र
३ मायनाकृत—थयारर रतंबरेदरी

(५) यहाँ के ज्यांमंदारों १२ मायनाविचारार्थकी प्रतिवेद हैं।

द्रुगम्बर साहित्य।

(१) ‘अनेकान्त’में प्रकाशित दियो मंडारोंकी खबियें एवं जिनरल कोष
आदिस १२ मायना समवीय नीजे खिले दिया साहित्यका पता चला है—
१ दादल अनुपेक्षा पं. योगदेव कुम्भनगर ‘अनेकान्त’ व. ४ पृ. ४८७
२ काठ ( उदयराय ) " पृ. ६००
३ " ( निजयाण ) "
४ " गोतमस्वामी (१)
५ मू. प्रा. टी. काठ ( मू. कुंकुम ) टी. वेष ( ब वर्गी )
६ कल्याणकीर्ति
७ जानां
८ " अपनेश गा. २१ विश्वसन हमारे संग्रहों
९ दोहा अनुपेक्षा अपनेश कुंकुमित्वो अनेकान्त’ व. ५
१० बारस्त अनुपेक्षा ( अपनेश ) जानिहै अनेकान्त व. ५
११ " " " कवि ईसर
१२ " " " कुंकुमित्वो
श्री महाविर जैन आर्धान्त गुरुपालक  केंद्र

श्री महाविर जैन आर्धान्त गुरुपालक  केंद्र

www.kobatirth.org

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only
१ मरणसमाधिपत्रका उठादू वंदीत्वमें आनेसे उसका समय ५ वी शताब्दी के पूर्व का निबिध है।

२ स्वयम् केरितिके पाणुपेशका हिन्दु अनुवाद सहित प्रकाशित है इस पर
२-३ माना ठीकाएं ् भी उपलब्ध हैं।

१ संस्कृत, कल्प दि. अनुपेशका प्रनयों का उठादू उपर कर ही दिया है।
श्रमणनुसंधा समय कुट पीछी गति घटत होता है। देसे मेमोरीका ' जैन सादिस्य और उत्तिस्ताः' प्रनर्।

४ जयदेवराविंत माननासंधि जैनसूक्ति वरं ४ प्र. ३१४ में ् भ मदुकुण मोदीका चेळ भी उसी पक्के प्र. ४६१६ में प्रकाशित है।

५ तथा ज्ञानोमकी मात्राना सज्जापके रचनेका महोना मदुकुणिसे चेळ लिया
गया है पर अपरकौशिके के अनुसार अध्यात्म होना चाहिये।

६ सकलवंदीका १२ माननावें विवेचनाविद्या जैनधर्म प्रसारक समारे
छप जुड़ी है। उसके परिशिष्टोंमें अपूर्वविज्ञाविज्ञाति १२ मात्राना भी प्रकाशित है।
अवानि प्रनबों में बाणाशिके अपर के रचित श्रीमद् देवचंद्रजी ग्रहित
भ्यानविदिका शौपाइने निधिन पर्ण है। परं अग्निकाल ईरोणान सेवित
प्रकाशित जैन सिद्दांत बोधग्रह मा. ३ के प्र. २१० में विश्वाससे विचरण
दिया गया है।

७ मुनि रमणिकविज्ञाती दूरंतित माननामकरणकी दो वाड़णीशी शिविये
पालनके टंडमते हैं जिनमते एकमें गा. १२२ है।

८ मार्थनाकूलक पाटण मंडरे में कहे हैं। मुनिश्री शृंगित मा. २४ वाणा उनसे
अमित है तब तो वह मार्घन है। मुनिश्रीने उसे १९ वीं चे पूर्वींका वत-
खाया पर वह छेलनसमय ही समय है। कुटक *साहित्य का समय ८ वीं
से १७ वीं तक है।

९ वाकालकृत वाक मांड़रे में कहे हैं। मुनिकी शृंगि मा. २४ वा ओ उनसे
ग्रहित है तब तो वह मार्घन है। मुनिकीने उसे १९ वीं चे पूर्वींका वत-
खाया पर वह छेलनसमय ही समय है। कुटक नागमत्य का समय ८ वीं
से १७ वीं तक है।

"आन्द्रा दि. है या ने ध्यान लेना उत्तरकाल है। दि. मण्डलवने भी
इनकी गतिये उपनयन हैं।"

१० जैनधर्म प्रमाणके प्रकाशित भेदा कुटकातिविद्या समस्यों के हैं।
(०७०्रेष्ठ ३४७ २०६५ ३३३)

आदाइ रहाइं परिवर्तित, घमाइं हुकाइं समयवर्ति।

नवाइं १४ कमाइं न चं परिवर्तित, पकिक्साहायं तवं १४ ीनेविति ॥ १३ ॥

तेषि नभो दुकारार्यां, महव्यादुरस्थायां।

जिनामें छुड़ानलवां, विनुज्ञयान करेण रयां ॥ १४ ॥

१५शों पिर पुष्पिन्निवाराणीं, उमकुहम्मे विचि न देखों।

ईहं विपु १५ वयवाेविवहिणीं, भो विचि जहा जलविहयां मीणीं ॥ १५ ॥

आणारों भोगुहिणीं तम्बने, १५ घरेलमं दुरसरिते १६ ऐनिछे।

न उमकुहे दुबिहे मस्तकें, भो विचि उककुड़ावैविविचि ॥ १६ ॥

आसापिशार २१ धरे विश मुको, २६ गमोहिणीं साहु मणिम मुको।

कथवाहीं २३ वि गिमे निम्नविको, २४ चिंदू जहा वाते बलवुको ॥ १७ ॥

आसंकितिडुं विषया अणिही, करूर्त छुड़ामुखापूर्त।

मोहें विनीर्गी २५ िशरि डुढ़ा, अध्यायिणा जयाकि वि सुहु ॥ १८ ॥

पवां मलामि अहिं करियों, जे पाओं २५ सिद्धवङ्गमसात्मविी।

जिनिहभणों घमो पशों, संसारस्तलीतरों समकिी ॥ १८ ॥

मात्रिवरी मानिसों सया हं, विन्यस्तियं परिनिर्माण काई।

पवयों २६ उसु इह किंचि नाहिं, मेरें मेरे दिंतु स्याहोहिताई। ॥ २० ॥

समामन सच्चीवाण समण, अालोकणां च उसस्यस्मिन।

अणाण पवधिकाराण, अिमि मे हुन समसाहितरण ॥ २१ ॥

जे मालवाण कूवभि पड्नि, एवं साचीं परिमामबक्ष।

अण जिन्याण सया लुणि, तें व्यंव निवाण सुहिं व्यही। ॥ २२ ॥

१४ पावाइं न ते करिति ॥ २०। १५ सीयाविति ॥ २०। १६ इहुं च ॥ ॥

१७ ०सयाहिणीं ॥ २८ किंचि जहा ॥ ॥ २६ अरोसेरे ॥ ॥ २० निञ्यि करि ॥

२१ ऊहि धेरेवि ॥ ॥ २२ गमोहिणीं सो वि मे विमुको ॥ ॥ २३ राहु य गवों ॥

२४ चिंदू जहा ॥ ॥ २५ यदेही ॥ ॥ २६ तुरिमाणस्यो ॥ ॥ २७ वपं औहि नाहिं गाहु ॥

आ भावनाकार भो हेशनाथाय सांखस्मित्ति अति उपवर्षि जिनाहो अग्री आरू ॥

आ इसक पुण्य श अशुर्व हंग आहो तेती भवन्य अकिथ प्रभुव भोगी करणि हं ते ॥ ॥

कर २६ दी दिवसाहित सरितानि नाथी। आ दुर्गानिया ॥

नन्दाम styling गोने ॥

१ निम्नप्रसंस्कर, २ आव्वकुसार, ३ रत्नस्वल्पस्वल्पकन्तु अनै ते आपानाक हेशनाथाय।
હરેક વસાવવા શાખું

શૈલી જીન સત્ય પીઠાણા નવું, વિશેષાંક

(૧) શૈલી મહાશીવર વિનાશે મંદિર

બાજુના મહાશીવર વાણિજ્યક જીવન અણાંની અણે ઇગ્રેસી અભિપ્રાય માટે: મુખ્ય જીન અણાંની (જેલ અને લૂફ અને બીજ).

(૨) હૃદેશની અણક

બાજુના મહાશીવર વાળથી ૧૦૦૦ વર્ષ પહેલા સાતસ વર્ષના જીન પ્રથમ અણક લગતી સમુદ્ર સમ્ય અણક: મુખ જીન હૃદેશ.

(૩) કંટાક્ટ: ૧૦૦: વિશેષક

બાજુના વિકાસભાઈ અણક અણક અણક અણક અણક અણક અણક અણક અણક અણક: મુખ અણક અણક.


કાશી તથા પાણી કાશી

શૈલી જીન સત્ય પીઠાણા નવું, જીન, મીઠમા, આંધ્ર, હાંમા, અમિબરામા તથા પાણી જીન સત્ય પીઠાણા નવું, જીન, મીઠમા, આંધ્ર, હાંમા, અમિબરામા તથા પાણી જીન સત્ય પીઠાણા નવું, જીન, મીઠમા, આંધ્ર, હાંમા, અમિબરામા.

—લખે—

શૈલી જીન સત્ય પીઠાણા સ્વરૂપની વાડી, રીચાંકડા, અમાદાબાદ.

બાગીની સરળકાશ અભિગીત અભિગીત અભિગીત અભિગીત}

For Private And Personal Use Only